DSSSB TGT & PGT

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड

ROJGAR ANKIT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अंक)

Part -7

LIVE 09-08-2024 05:00 PM

1 week - प्रतियोगिता

शनिवार 1 PM

10 - 12

हितोपदेश - 25 - 3 days

Sun - 80 questions

Mock Test

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अंक)

अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदं
विभवगुरूभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला।
तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं
मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि ॥ 19 ॥

अन्वय - वत्से, त्वम अभिजनवतः भर्तु श्लाघ्ये गृहिणीपदं स्थिता, तस्य विभवगुरुभिः कृत्यैः प्रतिक्षण आकुला अचिरात् प्राची अर्क इव पावनं तनयं प्रसूय च मम् विरहजां शुचं न गणयति।

अनुवाद - पुत्री ! तुम अति उत्तम कुल वाले पति के सम्माननीय गृहस्वामिनी के पद पर अधिष्ठित होकर उसके वैभव के कारण बड़े कार्यों में हरपल व्यस्त रहकर शीघ्र ही जिस प्रकार पूरब दिशा भगवान सूर्य को उत्पन्न करती है उसी प्रकार पावन पुत्र को जन्म देकर मुझसे वियोग के दुः ख पर ध्यान नहीं देगी।

व्याख्या - प्रस्तुत श्लोक में काश्यप शकुन्तला को समझाते हुए कहते है कि **वत्से** = पुत्री, त्व**म्** - तुम, **अभिजनवतः** = अति उत्तम कुल वाले, **भर्तुः**= पति के, **श्लाघ्ये** = सम्माननीय, **गृहिणीपदं** = गृहस्वामिनी के पद पर,। **स्थिता** = अधिष्ठित रहकर **तस्य** = उसके वि**भवरूभिः** = वैभव के कारण बड़े कार्यों में, प्रतिक्षण आकुला = हर पर व्यस्त रहकर, **अचिरात प्राची** = शीघ्र ही पूरव दिशा **अर्क इव** = जिसरूप सूर्यका प्रसूय उत्पन्न होती है उसी प्रकार पावन तनयं

प्रसूय = सभी को पावन बनाने वाले पुत्र को उत्पन्न रूप मम विरदजां = मुझसे वियोग के दुःख को शुचं न गणयिष्यसि = ध्यान नहीं दोगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी - अभिजनः अभि जन्+घञ्। श्लाघ्यः श्लाघ्+ण्यत् प्रत्यय। तन्य = तन् + अयन्। प्रसूय = प्र + सू +क्त्वा प्रस्तुत श्लोक में उपमा, काव्यलिंग, वृत्यनुप्रास अलंकार है तथा हरिणी छन्द है।

(शकुन्तला पितुः पादयोः पतति) (शकुन्तला पिता जी के चरणों पर गिरती है)

शकुन्तला - (सख्यावुपेत्य) हला ! द्वे अपिमां सममेव परिष्वजेथाम् ।

शकुन्तला - (सखियों के समीप जाकर) सखि! तुम दोनो मुझसे एक साथ गले मिलो।

सखयौ (तथा कृत्वा) सखि ! यदि नाम स राजा प्रत्यभिज्ञानमन्थरो भवेत ततस्तस्येदमात्मनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं दर्शय।

दोनों सखियाँ - (वैसे ही करती हुयी) सखि ! यदि कदाचित् वह राजा तुम्हे पहचानने मे विलम्ब करे तो उन्हे उनके नाम के अक्षरो वाली अंगूठी दिखाना।

शकुन्तला - अनेन संदेहेन् वामाकम्पितास्मि।

शकुन्तला - तुम दोनों के इस संदेह से मै कम्पित हो उठी हूँ।

सख्यौ मा भैषीः। अतिस्नेहः पापशंकी। - प्रसिद्ध सूक्ति

दोनों सखियाँ - डरो ना। अति स्नेह के कारण शंका हो रही है।

शारंगरव - युगान्तरमारूढ़ सविता। त्वरतामत्रभवती।

शार्गरव - सूर्य दो पहर में पहुंचा है। आप शीघ्रता करे।

शकुन्तला - (आश्रमाभिमुखी स्थित्वा) तात कदा नु भूयस्तपोवन प्रेक्षिष्ये।

शकुन्तला - (आश्रम की ओर मुख करके) पिताजी कब मै पुनः इस तपोवन में आऊँगी ?

काश्यप - भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य। भर्त्रा तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धं शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन् ॥20॥

अन्वय - चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी भूत्वा अप्रतिरथं दौष्यन्ति तनयंनिवेश्य तदर्पितकुटुम्बभरेण भर्त्रा सार्धम् अस्मिन् शान्ते आश्रमे पुनः पदं करिष्ये ।

अनुवाद - दीर्घकाल पर्यन्त चारो समुद्र तक विस्तारित पृथ्वी की सौत बनकर दुष्यन्त से उत्पन्न कभी पराजित न होने वाले पुत्र को राजसिंहासन पर बैठाकर उसको राज्य का भार दे देने वाले अपने स्वामी के साथ तुम फिर इस तपोवन में निवास करोगी।

व्याख्या - प्रस्तुत श्लोक मे शकुन्तला के पुनः आगमन के सम्बन्ध मे काश्यप कहते है कि -चिराय - दीर्घकाल पर्यन्त, चतुरन्तमहीसपत्नी चारों समुद्र तक विस्तारित पृथ्वी की सौत, **भूत्वा** = बनकर,

अप्रतिरथं = कभी पराजित न होनेवाले। दौष्यन्तिं तनयं निवेश्य दुष्यन्त से उत्पन्न पुत्र को राज सिंहासन पर बैठाकर, तदर्पितकुटुम्बभरेण उसको राज्य का भार दे देने वाले भर्ता सार्धम = अपने स्वामी के साथ, अस्मिन शान्तं आश्रमे पुनः पद करिष्यामि तुम फिर इस तपोवन में निवास करोगी।

(बहुव्रीहिसंज्ञकक तत्पुरूष) दौष्यंत्तिम् दुष्यन्तस्य अपत्यम् पुमान् । दुष्यन्त इन् । निवेश्य = नि + विश+णिच् + कत्वा (ल्यप्) । प्रस्तुत श्लोक में मायादीपक और काव्यलिंग अलंकार है तथा वसन्ततिलका छन्द है।

गौतमी - जाते। परिहीयते गमन बेला। निवर्तय पितरम्। अथवा चिरेणापि पुनः पुनरेवैव मन्त्रयिष्यते । निवर्ततां भवान ।

गौतमी - पुत्री! प्रस्थान का समय व्यतीत हो रहा है। पिता को लौटा दो। नही तो बहुत देर तक बार बार ऐसे ही उपदेश देते रहेगे। महानुभाव आप लौटे।

काश्यप - वत्से ! उपरूध्यते तपोऽनुष्ठानं ।

काश्यप - पुत्री ! यज्ञ कर्म में विघ्न हो रहा है।

शकुन्तला - (भूयः पितरमाशिलष्य) तपश्चरणपीड़ितं तात शरीरम्। तन्मातिमात्रं मम् कृतः उत्कण्ठितुम् ।

शकुन्तला - (पुनः पिता के गले लगकर) तपस्या करने के कारण शरीर आपका दुर्बल हो गया है। आप मेरे लिए अधिक चिन्ता न कीजिएगा।

काश्यप - (सनिःश्वासम्) काश्यप (उच्छवास लेकर)

शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम्।

उटजद्वारविरूढं नीवारवलिं विलोकयतः ॥ 21 ॥

अन्वय - वत्से ! त्वया रचितपूर्वम् उटजद्वारविरूढं नीवारवलिं विलोकयतः मम शोकः कथं नु शमम्।

अनुवाद - पुत्री! तुम्हारे द्वारा जो पहले रखा गया था कुटी के द्वार पर उगे हुए निवारधान को देखकर मेरा शोक कैसे शान्त हो सकेगा।

व्याख्या - प्रस्तुत श्लोक में काश्यप के जाने के बाद भी शोक होने का कारण बताते हुए कहते है कि - **वत्से** = पुत्री, त्वया: तुम्हारे द्वारा **रचितपूर्वम्** = पहले से रखा गया, **उटजद्वारविरूढं** = कुटी के द्वार पर उगे हुए, **नीवारबलिं** = नीवार धान की, **विलोकयत:** = देखकर मम शोक: मेरा शोक कथंनु **शमम्** = कैसे समाप्त हो सकेगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी = उटजद्वारविरूढं उटजद्वार विरूढ़ उटजद्वारविरूढं। उटात् जायते इति उटजः उद् + जन + । प्रस्तुत श्लोक में काव्यलिंग तथा परिकर अलंकार है और आर्या छन्द है।

सख्यौ - (शकुन्तलां विलोक्य) हाधिक् हा धिक। अन्तर्हिता शकुन्तला वनराज्या।

दोनों सखियाँ - (शकुन्तला को देखकर) हाय दुःख है, हाय दुःख है। शकुन्तला वन पक्तियों में छिप गयी।

काश्यप (सनिःश्वासम्) अनुसूये! गतवतीवां सहचारिणी। निगृह्य शोकमनुगच्छतं मां प्रस्थितम्।

काश्यप - (लम्बी श्वास लेकर) अनुसूया! तुम लोगों की सखी गयी। मै आश्रम में जा रहा हूँ। दुःख को रोककर मेरे पीछे पीछे आवो।

उभे - तात् ! शकुन्तला विरहित शून्यमिव तपोवनं कथ प्रविशावः?

दोनो - पिताजी! शकुन्तला से रहित सूने वन आश्रम में हम कैसे प्रवेश करे।

काश्यप - स्नेहप्रवृत्तिरेवंदर्शिनी। (सविमर्श परिक्रम्य) हन्त भो! शकुन्तला पतिकुलं विसृज्य लब्धमिदानी स्वास्थ्यम्। कतः।

काश्यप - स्नेह के कारण इस प्रकार दृष्टिगत होता है। (विचार करके घूमकर) अरे! शकुन्तला को स्वामी के घर भेजकर मुझे मानसिक शान्ति मिली। क्योंकि-

अर्थो हि कन्या परकीय एव
तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ॥ 22॥

अन्वय - कन्या हि परकीयः एव अर्थः। अद्य तां परिग्रहीतुः संप्रेष्य मम अयम् अन्तरात्मा प्रत्यर्पितन्यास इव प्रकामं विशद जातः।

अनुवाद - कन्या पराया धन होती है। आज उसे विवाह करने वाले स्वामी के पास भेजकर मेरी यह अंतरात्मा धरोहर लौटाने वाले के समान अन्तः करण अति प्रसन्न हो गया है।

व्याख्या - प्रस्तुत श्लोक में काश्यप कन्या को पराया धन मानते हुए कहते है कि कन्या हि परकीयः एव अर्थः = कन्या पराया धन होती है। अद्यतां = आज उसे, परिग्रहीतुः = विवाह करने वाले के, संप्रेष्य = साथ भेजकर, मम अयम् = मेरा यह अन्तरात्मा = मन, प्रत्यर्पितन्यास इव = धरोहर लौटाने वाले के समान, प्रकामं विशदः जातः = अति प्रसन्न हो गया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी = परकीयः = परस्य अयम परकीयः। प्रत्यर्पितन्यास = प्रत्यर्पितः न्यासः येन सः (बहुव्रीहि) प्रस्तुत श्लोक में उत्प्रेक्षा अलंकार तथा इन्द्रवज्रा छन्द है।

(इति निष्क्रान्ता सर्वे) -(सब प्रस्थान करते है)। चतुर्थ अंक का वर्णन विराम ॥

अभ्यास प्रश्न -3

1. काश्यप किस मन्त्र से शकुन्तला को आशीर्वाद देते हैं:-

(1) ऋग्वेद से

(2) लौकिक छन्द से

(3) देते ही नही

(4) कुछ कर नही सकेमे।

2. प्रकृति के तरफ से शकुन्तला को जाने की सूचना किससे प्राप्त होती है।

(1) कोयल द्वारा

(2) मोर द्वारा

(3) वृक्षो द्वारा

(4) नही जानते

3. शकुन्तला के साथ हस्तिनापुर कौन जाता है।

(1) प्रियंवदा

(2) शारंगरव

(3) अनसूया

(4) करभक

4. कन्या कैसी धन होती है?

(1) अपनी

(2) पराया

(3) धनिकों की

(4) योगियों की